IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के समायोजन का अध्ययन''

"A Study of Adjustment among Prospective Teachers Belonging to Scheduled Castes and Scheduled Tribes"

***Anil Kumar, **Dr. Harlal Bajiya**

*****Rsearch Scholar, Department of Education, ggtu, Mahi Dam Rd, Badvi Bricks, Badvi, Banswara, Uplaghantala, Rajasthan 327001, India

******Research Guide, Department of Education, ggtu, Mahi Dam Rd, Badvi Bricks, Badvi, Banswara, Uplaghantala, Rajasthan 327001, India

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के समायोजन का अध्ययन करना है। भावी शिक्षकों के समायोजन का आकलन करने से अन्य विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान की जा सकती है। इस हेतु शोधार्थी ने शोध के मुख्य उद्देश्य में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के समायोजन का अध्ययन करने हेतु निर्धारित शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण में समायोजन के उपकरण का प्रयोग किया है। इसका प्रशासन अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों में राजस्थान के झुन्झुनू जिले से 600 भावी शिक्षकों पर किया गया। प्रमुख सम्प्राप्तियों में पाया कि अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के समायोजन के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है। आँकड़ों के सकंलन हेतु समायोजन का मापन – ए. के. सिन्हा और आर पी सिंह द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी–मान, क्रान्तिक अनुपात मान, सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्दावली : अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, भावी शिक्षक।

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जो समाज में परस्पर सहयोग, संवाद एवं नियमबद्ध व्यवहार के द्वारा जीवनयापन करता है। समाज में सुव्यवस्थित, अनुशासित एवं मूल्यनिष्ठ जीवन जीने हेतु शिक्षा का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। शिक्षा मानव जीवन का अभिन्न अंग है, जो न केवल ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि उसके संपूर्ण व्यक्तित्व, व्यवहार, दृष्टिकोण और चिंतन पद्धति का निर्माण भी करती है। भारतीय परंपरा में शिक्षा को "सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात वह विद्या जो मनुष्य को अज्ञान, अविवेक, संकीर्णता तथा दुराग्रह से मुक्त करे–इस अर्थ में परिभाषित किया गया है। अतः शिक्षा व्यक्ति के बौद्धिक, भावनात्मक, नैतिक, संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास का प्रमुख माध्यम है।

वर्तमान 21वीं सदी में मानव समाज तीव्र वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति, प्रतिस्पर्धा, आर्थिक उदारीकरण तथा उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव से महत्वपूर्ण परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। शिक्षा व्यवस्था अब केवल ज्ञानार्जन का साधन न रहकर कौशल, तकनीकी दक्षता, पेशेवर क्षमता एवं संचार कौशल के विकास का आधार बन चुकी है। तथापि इस बदलते सामाजिक संदर्भ में संवेदनशीलता, सह–अस्तित्व, सामाजिक उत्तरदायित्व, सहानुभूति, समायोजन क्षमता तथा मानवीय मूल्यों का क्षरण भी दिखाई देता है, जिसके कारण शिक्षण क्षेत्र में भावी शिक्षकों की भूमिका और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

भारत एक विविधता–प्रधान देश है, जहाँ अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग ऐतिहासिक, सामाजिक तथा शैक्षिक वंचना का अनुभव करता रहा है। सामाजिक असमानताओं, आर्थिक सीमाओं, संसाधनों की कमी तथा सामाजिक अवरोधों के कारण ये वर्ग मुख्यधारा शिक्षा प्रणाली में पूर्णतः शामिल नहीं हो पाए। ऐसे संदर्भ में जब अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रवेश प्राप्त करते हैं, तो उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे न केवल शैक्षणिक रूप से दक्ष हों, बल्कि भावी शिक्षक के रूप में सामाजिक समायोजन, आत्मविश्वास, उचित स्वधारणा तथा सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति भी विकसित करें।

शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान समायोजन क्षमता भावी शिक्षकों के व्यक्तित्व विकास, प्रदर्शन, पारस्परिक संबंधों, आत्म–सम्मान तथा शिक्षण कार्य के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करती है। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के समायोजन स्तर को समझना इसलिए आवश्यक है क्योंकि यह उनके शैक्षणिक प्रदर्शन, पेशेवरीकरण, कक्षा प्रबंधन, सामाजिक सहभागिता तथा भविष्य के शिक्षक के रूप में प्रभावशीलता को निर्धारित करता है।

उपरोक्त विचारों एवं शैक्षणिक संदर्भों को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने वर्तमान अध्ययन "अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के समायोजन का अध्ययन" को चुनकर अनुसंधान की दिशा में एक सार्थक प्रयास किया है। यह अध्ययन न केवल भावी शिक्षकों की मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक स्थितियों का विश्लेषण करेगा, बल्कि शिक्षक शिक्षा संस्थानों, नीति–निर्माताओं, प्रशासनिक तंत्र एवं समाज के लिए आवश्यक दिशा–निर्देश भी प्रदान करेगा।

समस्या कथन :–

''अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के समायोजन का अध्ययन''

"A Study of Adjustment among Prospective Teachers Belonging to Scheduled Castes and Scheduled Tribes"

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :–

1. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का क्षेत्र एवं न्यादर्श :

समष्टि में शोधार्थी द्वारा न्यादर्श में राजस्थान राज्य में शोध कार्य के लिए राजस्थान के झुन्झुनू जिले के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों को शामिल किया है। शोधार्थी द्वारा न्यादर्श हेतु झुन्झुनू जिले के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् 600 भावी शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि का प्रयोग इसलिए किया गया क्योंकि इसका यह अभिप्राय है कि हमें निश्चित चयन विधि पर विश्वास करना है यही यादृच्छिक कहलाती है जो बहुत बड़े समूह या जनसंख्या को बिना किसी पक्षपात के उपलब्ध करा सके। इसलिए शोधार्थी ने यादृच्छिक विधि का प्रयोग करके न्यादर्श का चयन किया।

शोध की विधि एवं प्रक्रियाएं :

शोध की प्रकृति व सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता के आधार पर शोधार्थी ने प्रस्तुत अनुसंधान में आँकड़ों के एकत्रीकरण हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण समायोजन – ए. के. सिन्हा और आर पी सिंह का प्रयोग किया है। अध्ययन में प्रयुक्त सर्वेक्षण विधि तथा मानकीकृत उपकरण का चयनित विद्यार्थियों पर प्रशासन करना एक महत्वपूर्ण सोपान है। इस हेतु झुन्झुनू जिले में स्थित महाविद्यालयों के संस्था

प्रधानों (प्राचार्य/प्राचार्या) से शोधार्थी द्वारा व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क किया गया। उन्हें शोधकार्य के उद्देश्य से अवगत करवाया और उपकरण के प्रशासन की अनुमति प्राप्त की गई। तत्पश्चात् निर्देशित कक्षा में जाकर उपकरणों में दिये गये निर्देशों की अक्षरशः पालना करते हुए समायोजन की अनुसूचि का प्रशासन किया गया। तत्पश्चात् इन उपकरण की जाँच अंकन योजना के अनुसार की गई। इस प्रकार उपकरण की सहायता से प्रदत्तों एवं सूचनाओं को एकत्रित किया गया तथा उन्हें व्यवस्थित, वर्गीकृत व सारणीबद्ध किया गया। इन आंकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या प्रस्तुत की गई है। परीक्षणों के मूल प्राप्तांको का विश्लेषण करने हेतु (N) मध्यमान, प्रमाप विचलन (SD) एवं टी–मान, क्रान्तिक अनुपात मान (CR–Value), की गणना की गई।

परिकल्पनाएँ सं. 1 – अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है –

तालिका

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के समायोजन के प्राप्तांकों का प्रतिशत

भावी शिक्षक	N	M	SD	SED	D	df	C.R.
SC	300	39.16	13.55	1.08	9.56	598	8.85
ST	300	29.60	13.00				

** 0.05 **सार्थक स्तर**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हैं कि **अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के समायोजन के** प्राप्तांकों की गणना के आधार पर **भावी शिक्षकों में अनुसूचित जाति** के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 39.16 तथा **अनुसूचित जनजाति** का मध्यमान 29.60 प्राप्त हुआ एवं **अनुसूचित जाति** का प्रमाप विचलन 13.55 तथा **अनुसूचित जनजाति** का प्रमाप विचलन 13.00 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों एवं प्रमाप विचलनों के आधार पर गणना की गई है जिसमें क्रान्तिक अनुपात मान 8.85 प्राप्त हुआ। जो कि सार्थकता स्तर 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता का मान 1.97 गणना द्वारा प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान सार्थकता स्तर के मान से अधिक है। अतः उक्त परिणाम के आधार पर **परिकल्पना–1 "अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के भावी शिक्षकों के समायोजन** में सार्थक अन्तर है।" अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

ग्राफ

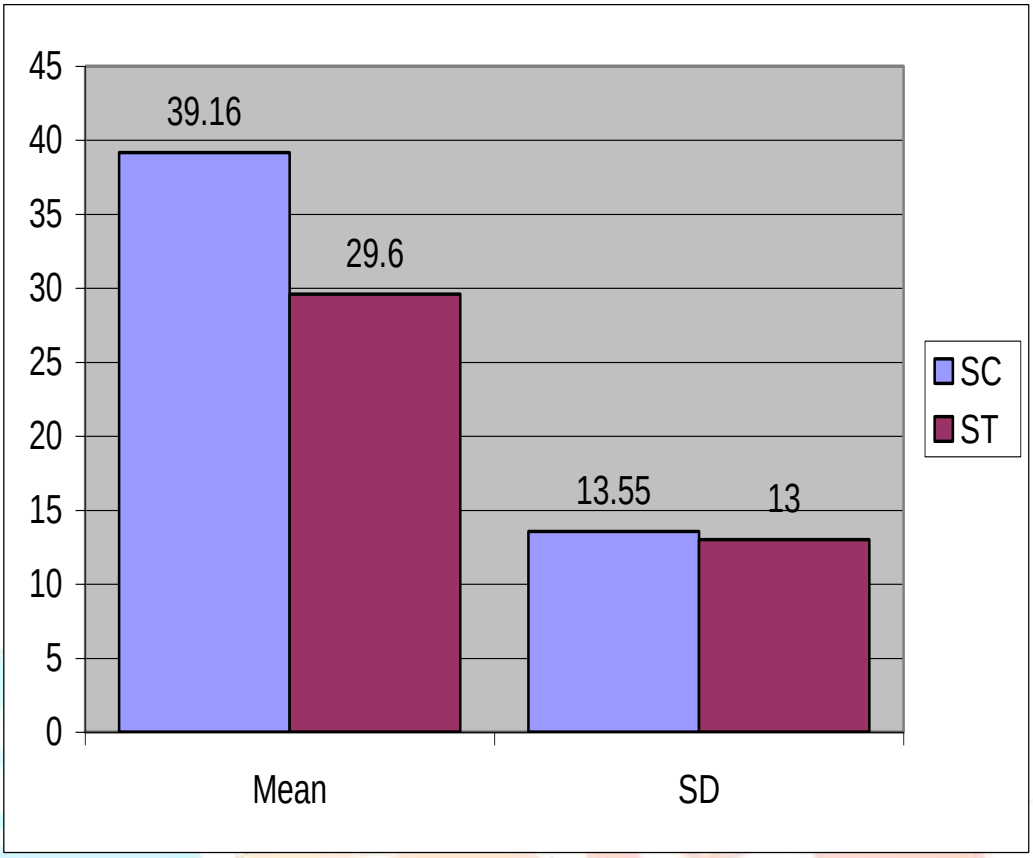

हिन्दी संदर्भ साहित्य

- **गोस्वामी, एस. (2017)** शैक्षिक मनोविज्ञान, आगराः विनोद पब्लिकेशन।
- **प्रसाद, जी. (2017)** भारतीय समाज में सामाजिक असमानता एवं शिक्षा, पटनाः विद्यार्थी ग्रंथालय।
- **पांडे, डी. (2017)** प्राथमिक शिक्षा और सामाजिक एकीकरण, वाराणसीः विद्या प्रकाशन।
- **सिंह, के. (2018)** शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यक्तित्व विकास, नई दिल्लीः यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन।
- **वर्मा, आर. (2018)** मानसिक स्वास्थ्य और परामर्श, इलाहाबादः भारतीय मनोविज्ञान प्रकाशन।
- **चौबे, के. (2018)** सामाजिक परिवर्तन और शिक्षा का समाजशास्त्र. इलाहाबादः लोकभारती प्रकाशन।
- **कौशल, एस. डी. (2019)** भारतीय शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन, नई दिल्लीः प्रकाशन संस्थान।
- **त्रिपाठी, र. पी. (2019)** समावेशी शिक्षा के सिद्धांत एवं व्यवहार, नई दिल्लीः आर. लाल बुक डिपो।
- **राव, जे. (2019)** भारतीय उच्च शिक्षा में समानता और गुणवत्ता, नई दिल्लीः विश्वविद्यालय अनुदान आयोग प्रकाशन।
- **बंसल, पी. (2019)** विद्यालयी शिक्षा और नवाचार, लखनऊः प्रगति पब्लिशिंग।
- **जोशी, ए. (2019)** शिक्षा में समानता एवं सामाजिक न्याय, दिल्लीः नेशनल एजुकेशन रिसोर्सेज।
- **तिवारी, एम. (2020)** सामाजिक न्याय एवं शिक्षा में अवसर की समानता, वाराणसीः साहित्य भवन।